प्राकृतिक सौन्दर्य के कवि : कालिदास

डॉ0 सुजीत कुमार सिंह

कालिदास के ग्रन्थों में प्रकृति एक महत्त्वपूर्ण आलम्बन के रूप में दिखाई देती है। यह प्रकृति जीवन के स्पन्दन के साथ–साथ सजीव प्रतीत होती है तथा मानव के अन्दर एक नवीन ऊर्जा का संचार करती है तभी तो आचार्य बलदेव उपाध्याय लिखते हैं कि–''उनकी दृष्टि सौन्दर्य की कोमल भावना को पहचानने तथा प्रकट करने में नितान्त चतुर है। उनका रसमय हृदय इन सौन्दर्य–वर्णनों में झाँकता हुआ दीख पड़ता है। वे वाह्य प्रकृति और अन्तः प्रकृति के पूरे सामरस्य के उपासक हैं।''उन्होंने अपनी रचनाओं में प्रकृति को आलम्बन, उद्दीपन, मानवीकरण एवं आलंकारिक आदि अनेक रूपों में चित्रित किया है।